

प्रेषक,

हरिश्चन्द्र मोशी,
सचिव,
उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

आयुक्त,
खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग,
उत्तरांचल, देहरादून।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति अनुभाग-1

देहरादून: दिनांक: 31 अगस्त, 2006

विषय- ज्वालपुर (हरिद्वार) में स्थित विभागीय गोदाम की मरम्मत विषयक।

महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके पत्र संख्या-234/आ0शि0शा0-गोदाम/2005-06, दिनांक 04 जुलाई, 2006 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि ज्वालपुर (हरिद्वार) में स्थित विभागीय गोदाम की मरम्मत हेतु उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम लिमिटेड हरिद्वार द्वारा तैयार रुपये 8.57 लाख के आंगणन को टी0र0सी0 द्वारा परिष्कारोपरान्त औचित्यपूर्ण धनराशि रु. 8.28 लाख (रुपये आठ लाख अष्टाईस हजार मात्र) की तारीख 2006-07 के सिये प्रस्तावकीय एवं वित्तीय स्वीकृति निम्न शर्तों के अधीन आपके निर्बतन पर रखते हुए खान करने की श्री राज्यपाल सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

1. उक्त धनराशि आहरित कर संबंधित निर्माण इकाई-1 उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम लिमिटेड हरिद्वार को इस शर्त के साथ उपलब्ध करायी जायेगी कि वह नव मार्च, 2007 तक उक्त आराखे गोदाम का निर्माण पूर्ण कराकर आयुक्त, खाद्य को हस्तान्तरित कराये जाने का प्रमाण एवं उपरोक्त प्रमाण पत्र उपलब्ध करायेगा। स्वीकृत धनराशि का अवशेष 10 प्रतिशत वित्तीय, भौतिक प्रगति एवं उपरोक्त प्रमाण पत्र उपलब्ध कराये जाने के पर्याप्त ही अवशेष की जायेगी।
2. आगमन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों को तथा जो परे सिद्धमूल ऑफ रेट में स्वीकृत नहीं है अथवा बाजार भाव से ली गयी हो, की स्वीकृति नियमानुसार अधीक्षण अभियन्ता से अनुमोदन करना आवश्यक होगा। तदोपरान्त ही आगमन की स्वीकृति मान्य होगी।
3. कार्य करने से पूर्व विस्तृत आंगणन/मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्रविष्टित स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, बिना प्राविधिक स्वीकृति के किसी भी दशा में कार्य को प्रारम्भ न किया जाये।
4. कार्य पर खर्चा ही व्यय किया जाये जितना कि स्वीकृत फॉर्म से अधिक व्यय कदापि न किया जाये।
5. एक मुस्त प्राविधान को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगमन गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृति प्राप्त करने के उपरान्त कार्य टेकअव किया जाये।
6. कार्य कराने से पूर्व सन्तत औपचारिकताये तकनीकी दृष्टि को मध्य नजर रखते हुए एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दत्त/विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य को सम्पादित करना सुनिश्चित करें।
7. कार्य कराने से पूर्व स्थल का भूमी-श्रुति निरीक्षण उच्च अधिकारियों एवं भुगर्दवेत्ता के साथ कराया जाये। निरीक्षण के पश्चात स्थल आवश्यकतानुसार निर्देशों तथा निरीक्षण टिप्पणियों के अनुसार कार्य किया जाये।